NJESR/January2023/Volume5/Issue1 E-ISSN – 2582-5836
DOI – 10.53571/NJESR.2023.5.1.85-87

'तमस' के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक साधारणीकरण की समस्या

डॉ० अंजु देशवाल
एसोसिएट प्राध्यापक, श्री एल०एन० हिन्दू कॉलेज, रोहतक
मोबाइल नं० 9466723448

(Receicved:30December2022/Revised:15January2023/Accepted:20January2023/Published:31January2023)

सांस्कृतिक साधारणीकरण की त्रासदी बाह्य व स्थूल नहीं वरन् आन्तरिक व सूक्ष्म है, वह व्यवहार रूप में गोचर नहीं बल्कि विचारों में दर्शनीय है। संस्कृति से सामान्य आशय लिया जाता है धर्म–आदर्शों से, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, भाषा बोली, रीति–रिवाजों के वैचारिक रूप से। संस्कृति का व्यवहारिक रूप सभ्यता मानी जाती है। 'साधारणीकरण' से तात्पर्य है व्यक्तित्व का विलयन, निर्वैयक्तिकरण, सम्बन्ध–विशेष का त्याग, असाधारण का साधारणीकरण। सामान्य अर्थ में कहें तो स्व–पर की भावना से मुक्त होकर किसी घटना या स्थिति को अनुभव करना ही साधारणीकरण है।

संस्कृति व साधारणीकरण का आशय स्पष्ट हो जाने पर सांस्कृतिक साधारणीकरण स्वतः स्पष्ट हो जाता है। इसका आशय है ऐसी स्थिति जिसमें एक धर्म दूसरे धर्म को, एक जाति–दूसरी जाति को, एक देश के व्यक्ति दूसरे देश के व्यक्ति के विचारों को, भाषा को, रहन–सहन को, वेशभूषा को समझ सकें, अपना सकें, उनके साथ तादात्म्य स्थापित कर सकें, विचारों का आदान–प्रदान कर सकें। मौखिक रूप से यह कथन आसान सा दिखता है मगर व्यवहारिक रूप में अपने को 'स्व' से मुक्त रखना अत्यन्त दुष्कर कार्य है, इसकी सिद्धि ही तो मोक्ष है। भारत–पाक विभाजन के मूल में यही कारण निहित रहा है। एक दूसरे के धर्म में, जाति में, भाषा में, खान–पान व रहन–सहन में समन्वय का अभाव और इसी अभाव की परिणति है – विस्थापन, शरणार्थी व पुनर्वास संबंधी त्रासदियाँ। अगर एक धर्म, दूसरे धर्म के भावों को धारण करता, एक जाति दूसरी जाति के आदर्शों को समझती, एक इन्सान दूसरे इन्सान के दर्द को समझता, अनुभव करता तो खून की नदियाँ नहीं बहती, हजारों–लाखों की संख्या में लोग अपने घरों से उजड़ते नहीं, बहनों, बहुओं की इज्जत सड़क पर नीलाम नहीं होती, आदमी आदमी के खून का प्यासा नहीं होता, शरणार्थियों के साथ भेदभाव नहीं होता, लोगों को फिर से बसने के लिए अविश्वास भरी निगाहों का सामना नहीं

करना पड़ता। सांस्कृतिक साधारणीकरण का अभाव विभाजन से पूर्व भी था और उसके पश्चात् भी बना रहा। विभाजन पर आधारित 'तमस' में इसी तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास है।

भीष्म साहनी ने अपने यौवन में देश का स्वतंत्रता संग्राम व साम्प्रदायिक दंगों में लाखों निरपराध लोगों की हत्याएँ व अन्य अनेक प्रकार के अत्याचार देखे हैं। साम्प्रदायिकता की स्थिति को उद्घाटित करना उनके लेखन का प्रेरणा बिन्दु रहा है। उनके अनुसार साम्प्रदायिकता की भावना ही सामाजिक जीवन व संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

मुरादअली जैसे लोग अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिकता की भावना को हवा देते हैं। मस्जिद के सामने सुअर मरा मिला तो बदले में मन्दिर के सामने गाय काटी गई। दोनों के ही साम्प्रदायिक नेता दंगे भड़काने के लिए सक्रिय हो उठते हैं। 'अल्लाह हो अकबर' व 'हर–हर महादेव' के नारे रात के सन्नाटे को चीरने लगते हैं। ढोक–मुरीदपुर की मुसलमान टोली सरदार इकबाल सिंह को जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करा इकबाल अहमद बनाती है।

नूरपुर के पण्डित चपरासी को अब अपनी पुत्री के लिए कोई प्रेम नहीं रह गया है क्योंकि उसे गाँव के मुस्लमान अल्लाहरखां ने उठा लिया है। अब उनकी बेटी का धर्म भ्रष्ट हो गया, उनके सारे आत्मिक भाव, जज्बात धर्म से ही सम्बद्ध रह गए। प्रकाशो की माँ बाबू से कहती है ''अब हमारे पास आकर क्या करेगी जी, बुरी वस्तु तो उसके मुँह में उन्होंने पहले से ही डाल दी होगी।''

संस्कृति, धर्म, जात–पात ये सब अमीर वर्ग के चोचले हैं, चाहे वह हिन्दू वर्ग से सम्बद्ध हो या मुस्लिम तबके से। सामान्य जीवन में हिन्दू–मुस्लिम में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं दिखाई देता। लेकिन धर्म के नाम पर समस्त मानवीय संवेदनाओं को होम कर देने वाले समाज के कुछ अन्धे मानव पूरे जन–समुदाय को अशान्त और भयभीत कर डालते हैं। हिन्दू–मुस्लिम के बीच भेद डालने वाली यही अन्धी आवेशजनित विचारधारा है। भारतीय धर्म और सम्प्रदाय के ढोंगियों की कूट चालें हैं जिन्हें धर्म के तात्विक रूप की पहचान तो बिल्कुल नहीं होती, धर्म के बाह्य विधानों, खान–पान, नाम,

पोशाक आदि को ही वे धर्म का असली स्वरूप मान बैठते हैं। भीष्म साहनी जी ने स्वयं अपने संस्मरण में लिखा है कि ''दंगे तो पाँच–छः दिन तक ही रहे, लेकिन वर्षों पहले से देश के वायुमंडल में हिन्दू–मुस्लिम तनाव पाया जाता था। जबसे पाकिस्तान की तहरीक चली थी, साम्प्रदायिक प्रचार को एक तरह से खुली छुट्टी मिल गई थी। ... यह एक तरह से नया मर्ज फूटा था, एक बीमारी फैली थी जो देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैलती चली गई थी।''

लेखक साम्प्रदायिकता का मूल कारण अज्ञान और अन्धविश्वासों व रूढ़ मान्यताओं पर पलने वाली जड़ संस्कृति को मानता है जो ऊपरी भेदों के कारण मनुष्यों को आपस में लड़वाकर अपनी अस्मिता को बनाए रखना चाहती है। साहनी जी जिले के डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि इनके नाम, धर्म, वेशभूषा, रहन–सहन, धार्मिक कृत्यों और खान–पान के तरीकों में ऊपरी भेद है पर ये उसे अत्यधिक अहमियत देते हैं, उसे अपने अस्तित्व से, पहचान से जोड़ लेते हैं और उस पहचान के लिए वे मरने और मारने पर भी उतर आते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कैलाशपति ओझा, हिन्दी त्रासदी : सिद्धान्त और परम्परा, साहित्य सदन, देहरादून, 1968
2. चमनलाल (सम्पादक), प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास (भाग दूसरा), हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्ड़ीगढ़, 1988
3. नगीना जैन, औचलिकता और हिन्दी उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976
4. बदरी प्रसाद, प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास, ओम प्रकाशन, दिल्ली, 1987
5. रमेशचन्द्र मिश्र, पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1979
6. भीष्म साहनी, तमस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1997
7. भीष्म साहनी, ''तमसः संस्मरण'', भीष्म साहनी एवं रामदरश मिश्र (सम्पादक), आधुनिक हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, 1980